# ''रामचरित मानस में हनुमान तथा शबरी की भक्ति भावना''

**डॉ० गीतांजली कुमारी***

भक्ति भक्त को भगवान के साथ निरन्तर जोड़े रहती है। यह भक्त के मन को एकाग्र करके श्रेष्ठसहित ईश्वर की उपासना करने के लिए प्रेरित करती है। जहाँ तक भक्ति के अर्थ का प्रश्न है, इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि मन को सच्चाई से भगवान को सौंपना और निरन्तर उसकी उपासना करना ही भक्ति है। भक्ति का स्वरूप भक्त को ''सर्वभूत हिते रता'' बनाना है। ''मय्यावेशित चेत साम''से ज्ञात होता है कि भगवान में चित्र का लगाना ही भक्ति हैं और इसका फल यह होता है कि परमात्मा भक्त को मृत्युरूप संसार सागर से अच्छी तरह से उद्धार कर देता है– ''तषामहं समृद्धर्ता मृत्युसंसार सागरातं''। भगवान के लिए कर्म करना या उनके निमित्त कर्म करना ''मत्कर्म परमो भव'' मदर्थमपि कर्माणी'' भक्ति है।

रामायण एक महाकाव्य है। इसमें अनेक पात्रों का विवरण मिलता है। सभी पात्र भक्ति भावना से भरपूर्ण है। महाकाव्य रामायण में हनुमान भी एक महत्त्वपूर्ण पात्र है।

रामचरित मानस' में हनुमान की भक्ति का विशिष्ठ स्थान है। श्री रामावतार की भाँति हनुमान भी वानर–वपुन भगवान शिव के अवतार थे। बालकाण्ड से अरण्यकाण्ड तक भगवान शंकर बंदना पहले करके श्रीराम बन्दना के श्लोक हैं। किष्किंधाकाण्ड में स्वयं शंकर जी हनुमान् रूप से श्रीराम की सेवा में अवतरित हो जाते हैं वहाँ से उत्तरकाण्ड पर्यन्त श्रीराम बन्दना के श्लोकों को प्रथम स्थान दिया गया है और दरसभावानुसार शिव बन्दना पश्चात की गयी है। सुन्दरकाण्ड में शंकर के स्थान में हनुमान् जी की ही वन्दरा पश्चात की गयी है। इससे स्पष्ट है कि हनुमान् जी शंकर के ही अवतार हैं सेवक सेव्य भक्ति का विनियोग हनुमान् जी के कार्य और परिस्थिति को ध्यान मे रखकर किया गया है। सतत् प्रेम करनेवाले भक्त को भगवान बुद्धियोग देते हैं–

**'ददामि बुद्धयोगं तं मेन मामुपयान्ति ते'**

***असिस्टेन्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग ए० एन० एस० कॉलेज जहानाबाद (बिहार)**

आदि से अन्त तक हनुमान् जी राम के सेवक बना रहना पसंद करते है। बुद्धि के बल से ही हनुमान् जी भगवान को पहचान जाते है और उनके प्रश्नों का उत्तर देते हुए राम अपने नाम रूप और धाम का निर्देश करते हुए कहते हैं

**''कोसलेस दशरथ के जाए।**
**हम पितु वचन मानि बन आए।**
**नाम राम लाछिमन दोउ भाई।**
**संग नारि सुकुमारि सुहाई।**
**इहाँ हरी निसिभर बेदेही।**
**विप्र फिरहिं हम खोजतते ही।।''**

'नाम राम लछिमन दोउ भाई' से नाम, 'कोसलेस दशरथ के जाए' इसमें धाम तथा रूप, 'हम पितु बचन मानि बन आए' और 'इहाँ हरी निसियर बैदेही' से लीला को वर्ण किया गया है। इन सबों का सगुण भक्ति में बड़ा महत्व है। नाम, रूप, गुण, लीला और धाम जिसका वर्णन उपर हुआ है, से स्पष्ट हो जाता है राम, लक्ष्मण, सीता सभी अवतार हैं। हनमुान जी को सबसे अधिक प्रसन्नता राम की सेवा में होती है। व्यक्तित्व और परिस्थिति के अनुसार उनकी भक्ति में सभी दीनता, यथार्थ शरणाणति, अलौकिक अनुरक्ति असाधारण निर्भरता और गम्भीर ज्ञान को हुआ है। हनुमान स्वयं राम से कहते हैं–

**''जदपि नाथं बहु अवगुर मोरें।**
**सवेक प्रभुहि परै जनि मोरें।।**
**''तापर मैं रघुवीर दोहाई।**
**जानउँ नहिं कछु भजन उपाई। सेवक सुत पति मात भरोसे।**
**रहइ अशोच बनई प्रभु पोंसें।।**
**अस कहि परेउ चरण अकुलाई।**
**निज तनु प्रगटि प्रीतिउर छाई।।''**

उपयुर्क्त पंक्तियाँ में हनुमान जी ने जीव स्वरूप, परस्वरूप, विरोधस्वरूप उपाय स्वरूप और फलस्वरूप पाँचों स्वरूपों का रहस्य खोल दिया है। ज्ञान गुनसागर हनुमान के लिए सभी स्वरूपों के रहस्य को जान लेना सहज था। राम दूत' अनुमान 'अतुलित बलधामा' हैं। कुमति को दूरकर सुमति प्रदान करने का काम हनुमान जी का सहज धर्म है। आप रामकाज करने के लिए आतु रहते है और प्रभु

चरित्र सुनने के लिए व्याकुल रहते है। 'राम लखन सीता मन वसिया' हनुमान की सतत भक्ति को अभिव्यक्त करता है। राम ने अहंकार शून्य हनुमान् के मस्तक पर पाप, और माया तीनों को एकसाथ मिटा देने वाले करकमल रख दिया।

''सीतल सुखद थाँहजेहि कर की मेटिति पाप ताप, माया।''

जड़माया में तीनों प्रकार की गुणामयी माया का सामना हनुमान् जी को करना पड़ता है। देवलोक से आयी हुई भरसा सत्वगुणी, अधोनिवासिनी सिंहिका तमोगुणी और मध्यलोकस्थ लंकरनिवासिनी लंकिनी रजोगुणी थी। सभी प्रकार की माया को मारूति–नंदन ने जीत लिया। उच्च मध्य और नील स्थानों में रहनेवाली होने के कारण गीता के अनुसार इनका क्रमशः सात्विकी, राजसी और तामसी होना सिद्ध है।

**''उर्ध्व गच्छन्ति सत्वस्था, मध्ये तिस्ठान्ते रोजसाः। जघन्यगुणवृत्तिस्या अधोगच्छन्ति तामसाः।।''**

अहंकार के पूर्ण अभाव के करण हनुमान् अपना बल भी भूल जाते हैं। आप भक्ति और शक्ति के समान अधिकारी है। इसी कारण भगवान के श्रीमुख से ये उद्‌गार निकल पड़ते है :

**''सुनु कपि तोहि समान उपकारी।**
**नहिं कोई सुर नर मुनि तनुधारि।।''**

शबरी जी मन, वचन और शरीर–सर्वांग से भगवान के शुद्ध प्रेम में संराबोर थी, भगवान में उनकी निष्ठा वात्सल्यभाव की थी। जैसे माता अपने बच्चे के लिए अच्छी चीजें संग्रह कर रखती है वैसे ही शबरी जी सुन्दर फल भगवान के लिए लाकर सुन्दर स्नेह में डुबाकर रखती है। भगवान भाव के भूखे हैं। भगवान ने भी शबरी जी को माता के समान आदर दिया। इस स्थल पर शबरी जी के व्यक्तित्व और परिस्थिति की दृष्टि से भाव की प्रधानता के रूप में भक्ति का विनियोग हुआ है।

शबरी जी को जो कुछ प्राप्त हुआ वह संतशिरोमणि महर्षि श्रीमतंग मुनि जी महाराज की शरणागति प्राप्ति से। सब कुछ उन्हें संत की अनुकूलता के प्रसाद के रूप में प्राप्त हुआ निवृत्तिमार्गी के लिए सबसे पहले संत की कृपा प्राप्त होनी चाहिए तभी 'अनुपम सुख मूला' भक्ति की प्राप्ति होती है–

**''भगति तात अनुपम सुख मूला।**
**मिलई जो संत होई अनुकूला।।''**



शबरी जी के व्यक्तित्व और परिस्थिति की दृष्टि से संत की कृपा की महत्ता और भाव की प्रधानता के रूप में भक्ति का विनियोग हुआ है।

**संदर्भ सूची :**


1. गीता (12 : 3)
2. गीता (12 : 7)
3. गीता (12 : 7)
4. गीता (12 : 10)
5. गीता : अध्याय 10/10
6. रामचरित मानस : कि. का. दो. 2–3–5
7. गीता : अ० 14–18
8. रामचरित मानस : दो. 44–7
9. रामचरित मानस : दो, 45
10. रामचरित मानस : अरण्डकाण्ड दो, 9–4.8
11. रामचरित मानस : अरण्डकाण्ड दो, 35–9